श्री कल्याण स्वामीजीका समाधी मंदिर, डोमगाँव, ता.परंडा, जि.धाराशिव (उस्मानाबाद)

समर्थशिष्य योगिराज श्री कल्याण स्वामी चरित्र (हिन्दी)

: लेखक :

सचिन अशोक जहागिरदार

श्री कल्याण स्वामीजी की समाधी एवं राम पंचायतन मूर्तीयाँ, डोमगाँव

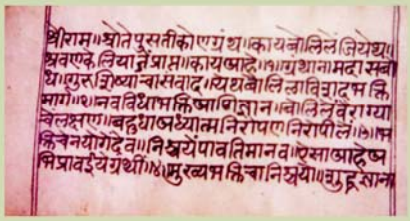

श्री कल्याण स्वामीजी के हस्ताक्षरमें ग्रंथराज 'दासबोध' की मूलप्रती, डोमगाँव

श्री कल्याण स्वामीजीने अपने हाथोंसे रेखांकित किए श्री हनुमानजी

श्री कल्याण स्वामीजी अपने बाजूपर यह हनुमानजीकी प्रतिमा बाँधते थे। इसका आकार २.५ इंच X २.५ इंच है।

इन हंडोमें श्री कल्याण स्वामीजी प्रतिदिन 'उस्मोडी' नदीसे सज्जनगड पर पानी लातेथे। इनका वजन लगभग १८ किलो है। (सज्जनगड)

।। राम ।।

।। श्री समर्थ रामदास स्वामी के शिष्योत्तम योगीराज श्री कल्याण स्वामी का चरित्र।।

श्री कल्याण स्वामी पुण्यतिथी त्रिशताब्दी वर्ष – २०१३-१४

युगाब्द ५११५-५११६

सचिन जहागीरदार

९०९६३६३३४८

।। राम ।।

श्री समर्थ रामदास स्वामी के शिष्योत्तम योगीराज श्री कल्याण स्वामी

श्री समर्थ रामदास स्वामी और ऊनके परमशिष्य श्री कल्याण स्वामी यदयपी देह से भिन्न थे किन्तु वे अंत:करण से पुर्णत: एकरुप थे। श्री कल्याण स्वामी जी ने अपना संपुर्ण जीवन श्री समर्थ जी के चरणों में अर्पित कर दिया था। यह गुरुशिष्य संबंध भारतीय संस्कृती का एक शिखर है। रामायण में श्री हनुमान जी का जो स्थान है वहीं स्थान समर्थ चरित्र में श्री कल्याण स्वामी का है।

जन्मकथा

महाराष्ट्र प्रांत में भोगुर नाम का एक गांव है। वहॉ पर कृष्णाजीपंत कुलकर्णी नामक एक सात्वीक ब्राह्मण थे। वे देशस्थ ऋग्वेदी ब्राह्मण थे। उनका गोत्र कौशिक था। यथासमय उनका विवाह हुआ और अपत्यप्राप्ती भी हुई। किंन्तु यह आनंद उन्हे बहुत समयतक नही मिला। दुर्भाग्यवश उनकी पत्नी और अपत्य की थोडे ही दिनों में मृत्यु हो गई। युवावस्था में हुए इन आघातों से विरक्त होकर कृष्णाजीपंत तीर्थयात्रा को निकल पडे। बहुत से तीर्थस्थानों का दर्शन करते हुए वे कोल्हापुर में आ गए । कोल्हापुर के श्री महालक्ष्मी मंदीर में वे प्रतिदिन सप्तशती का पाठ करते और पुरा दिन भक्ती, उपासना में व्यतीत करतें।

इसी कोल्हापुर में बरवाजीपंत कुलकर्णी नाम के एक धर्मनिष्ठ ब्राह्मण रहते थे। उन्हे एक बहन थी। जिसका विवाह होना बाकी था। और बरवाजीपंत अपनी बहन के लिये सुयोग्य वर का संशोधन कर रहे थे । और उन्हे उसी समय स्वप्न में दृष्टांत हुआ की श्री महालक्ष्मी मंदीर में आये हुए कृष्णाजीपंत से अपनी भगिनी का विवाह करें। इसी तरह से कृष्णाजीपंत को भी कुछ संकेत मिल गये। दुसरे दिन बरवाजीपंत प्रात:काल में श्री महालक्ष्मी मंदीर गये। वहॉ उन्हे अपनी उपासना में लिन कृष्णाजीपंत मिले। एक दुसरे का परिचय होने के पश्चात् बरवाजीपंत ने कृष्णाजीपंत को विवाह का

विचार बताया। अपनी बहन रखमाबाई पत्नी के रुप में स्वीकारने की प्रार्थना की। कृष्णाजीपंत ने भी इस को मान्यता दे दी। किंतु संतान होने के बाद फिर से तीर्थयात्रा करने का एवम संपुर्ण तथा आध्यात्मिक जीवन बिताने का निश्चय भी बता दिया। अपने प्रारब्ध को कृष्णाजीपंत टालना नही चाहते थे। इसके पश्चात कृष्णाजीपंत और रखमाबाई का विवाह संपन्न हुआ। इस पती पत्नी को श्री महालक्ष्मी माता की कृपा से प्रथम पुत्र हुआ। उसका नाम 'अंबाजी' रखा गया। 'अंबाजी' का जन्मवर्ष सन १६३६ के आसपास हो सकता है। अंबाजी के बाद हुए दुसरे पुत्र का नाम 'दत्तात्रय' ऐसा रखा गया। इन दोनो भाईयोंको ऐ बहन भी थी। कुछ समय वैवाहीक जीवन बिताने के बाद कृष्णाजीपंत सर्वसंगपरित्याग करके श्रीक्षेत्र काशीं को चले गए । वहॉ उन्होने संन्यास आश्रम ग्रहण किया। इसके बाद इतिहास में उनका कोई उल्लेख नहीं है।

इस घटनाक्रम के बाद रखमाबाई और उनके पुत्र पुनःश्च कोल्हापुर को बरवाजीपंत के पास आ गए थे। यह सन १६४५ का समय था। इसी समय अपने १२ वर्ष की तीर्थयात्रा, भारतभ्रमण पुर्ण कर समर्थ रामदास स्वामी महाराष्ट्र में पधारे थे।

- **गुरुशिष्य की प्रथम भेंट**

समर्थ जी का आगमन कोल्हापुर में हुआ। वहॉपर श्री महालक्ष्मी मंदीर में उनके किर्तन शुरु हो गए । प्रखर वैराग्य, ओजस्वी वाणी और ऐसे उनके गुणोंसे मंडित समर्थ जी के किर्तनों के श्रवण हेतु भीड उमड पडती थी। धर्मसंस्थापना ही इन किर्तनोंका विषय और उद्देश था। बरवाजीपंत प्रतीदिन किर्तन सुनने जाते थे। समर्थजी का दिव्य व्यक्तित्व देखकर उन्हे समर्थ जी को अपना सद्गुरु बनाने की इच्छा हुई। उन्होने समर्थ जी को इस विषय में प्रार्थना की। समर्थ जी ने भी बरवाजीपंत का भाव देखकर शिष्यत्व प्रदान करने को मान्यता दे दी। एक शुभ दिन, समर्थ जी बरवाजीपंत के यहॉ पधारे। घर में मंगलमय वातावरण था। समर्थजी ने बरवाजीपंत को अनुग्रह देकर कृतार्थ कर दिया। बरवाजीपंत भी समर्थ जी जैसे सद्गुरु मिलने से धन्य धन्य हो गये थे। परंपरा के अनुसार बरवाजीपंत ने कुछ गुरुदक्षिणा अर्पण करने की इच्छा प्रकट की। किन्तु सोने और मिट्टी को एक समान माननेवाले ब्रम्हनिष्ठ समर्थ जी ने कुछ भी स्वीकारने से मना कर दिया। किंतु जब बरवाजीपंत ने बहुतही आग्रह किया तब समर्थजी बोले ''अगर कुछ देना ही चाहते हो तो, धर्मकार्य के लिये यह 'अंबाजी' मुझे दे दो।''

घर में आने के बाद से ही समर्थ जी का परिक्षण शुरु हो गया था। १०-१२ वर्ष की आयु का 'अंबाजी' बहुत ही बुध्दिमान एवम कार्यतत्पर है। उसका अविरत कुछ ना कुछ काम कर रहा है। और वैसे भी गुरु शिष्य का संबंध जन्मजन्मांतर का होता है।

समर्थ जी की यह गुरुदक्षिणा सुनकर बरवाजीपंत बोले ''सद्गुरुदेव, अंबाजी मेरा पुत्र नहीं है। यदि यह मेरा पुत्र होता तो में इसे आपको समर्पित कर देता। इस विषय में इसकी माता से पुछना पडेगा।'' उसी समय एक कोने में खडी रखमाबाई ने बडे विनम्र भाव से कहॉ, ''स्वामी जी केवल अंबाजी ही क्यों? मुझे और दत्तात्रय को भी आपकी शरण मे लिजीयें। उस माता के यह वचन सुनकर समर्थ जी को प्रसन्नता हुई। उन तीनों को अनुग्रह देकर अपने साथ चलने की आज्ञा दी। अंबाजी, दत्तात्रय और उनकी माता समर्थ जी के पिछे, पिछे निकल पडे। धन्य है वह माता जिसने अपने पुत्रों को धर्म के लिए समर्पित कर दिया।

कुछ समय के बाद समर्थ जी ने 'दत्तात्रय' को गृहस्थ वर्ष में प्रवेश जीवन बिताने की आज्ञा की। विवाह हो गया। उनकी सातारा के पास शिरगांव में एक मठ और हनुमान मंदीर की स्थापना कर के दे दी। माता रखुमाबाई वहीं रही। 'दत्तात्रय' भविष्य दत्तात्रय स्वामी के नाम से विख्यात हुए । उन्होंने अपना जीवन राम भक्तीं में बिताया। 'अंबाजी' संपुर्ण जीवनभर समर्थ सेंवा में रहे। शिष्यत्व का एक आदर्श उन्होने अपने जीवन से प्रस्तुत किया।

अंबाजी का कल्याण हो गया

महाराष्ट्र के सातारा के पास 'मसुर' नाम का एक गाव है। समर्थ जी ने वहॉ रामजन्मोत्सव आरंभ कर दिया। इस रामजन्मोत्सव में बहुत बडी रथयात्रा निकाली गयी। प्रभु श्री रामचंद्रजी का रथ आगे बढ रहा था। इतन में एक पेड की डाली रास्ते में रुकावट बन गयी। रथ उस डाली के वजह से वहीं अटक गया। रथ को आगे ले जाने के लिए ये उस डाली को तोडना आवश्यक था। किंतु समस्या यह थी की, वह डाली एक गहरे कुएं के उपर से आती थी। और जो भी उस डाली को तोडने का प्रयास करेगा वह उस कुंए में गिरने का संभव था। ऐसे प्रसंग में सभी लोग चिंतीत हो गए कि रथ कैसे आगे बढेगा? उसी समय समर्थ जी की आज्ञा लेकर अंबाजी उस

वृक्षपर चढे। और कुल्हाडी के कुछ प्रहारों में उस डाली को तोड दिया। डाली टुट कर गहरे कुए में गिर पडी। उसके साथ अंबाजी भी उस कुए में गिर गये। रथ का मार्ग खुला हो गया। अत्याधिक आनंद के साथ रथ मार्गस्थ कर सभी भक्तजन मंदीर में गये। इधर शाम हो गयी फिर भी अंबाजी कुए से बाहर नही आये। सभी को उनकी चिंता होने लगी। वे सब समर्थ जी के पास गये। समर्थ जी कुए के पास आए और उन्होने उपर से पुछा ''अंबाजी, सब कल्याण है ना?'' तो नीचे गहरे कुए से आवाज आ गयी, ''स्वामी, आप की कृपा से सब कल्याण है''। इसके बाद अंबाजी बाहर आ गये। और 'कल्याण स्वामी' के नाम से विख्यात हुए । धर्मकार्य के लिए कल्याण स्वामी ने कभी अपने देह की चिंता नहीं की।

समर्थ रामदास स्वामी और श्री कल्याण स्वामी

सन १६४५-४६ से सन १६७८ तक श्री कल्याण स्वामी समर्थ जी के साथ निरंतर सेवांमे रहें। इस काल में घटे हुए कुछ प्रसंग बहुत ही बोधप्रद है।

अभंग का विस्मरण

महाराष्ट्र के औरंगाबाद में एक मंदिर में समर्थ जी का किर्तन था। श्री कल्याण स्वामी प्रत्येक किर्तन में समर्थ जी की साथ करते। समर्थ जी के केवल संकेत ही मात्र से श्री कल्याण स्वामी 'अभंग' कहते और वह समर्थ जी को जो अपेक्षित वही होता था। इस से किर्तन जैसे आनंदसागर हो जाता था। किंन्तु एक दिन श्री कल्याण स्वामी को 'अभंग' का विस्मरण हो गया। तो समर्थ जी ने अपने हाथ का 'करताल' कल्याण स्वामी को फेंक के मारा। वह 'करताल' कल्याण स्वामी के सिरपर जा लगा। रक्त की धारा बहने लगी। लेकीन कल्याण स्वामी को वह अभंग याद आ गया। समर्थ जी हमेशा कहते थे। ''मैं जो काव्य करता हूँ इसे कल्याण हमे परोसता हैं''। बाद में वह घाव समर्थजी ने स्वयंम् भर दिया।

‘‘कल्याण, वस्त्र उड गया’’।

एक बार सज्जनगड पर बडी तेज हवाएं बहने लगी। समर्थजी का एक वस्त्र वहीं पे सुखाने के लिए रखा था। वह उड गया और नीचे जमीन पर गिरने लगा। उसी समय समर्थ जी बोले, ‘‘कल्याण, वस्त्र उड गया’’ समर्थ जी का यह वचन सुनकर, कल्याण स्वामी ने उस उँचे टिले हवा में छलांग लगाई और वस्त्र पकड लिया। अपने गुरुदेव का वस्त्र मलिन न हो इसलिए यह साहस था।

मीठा आम

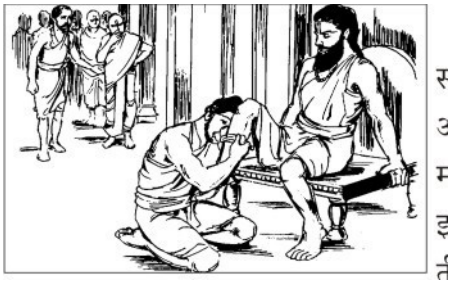

समर्थ जी एक दिन वेदनांओंसे बहुत त्रस्त दिखे। सभी शिष्यों ने समर्थजी से इसका कारण पुछा। तो समर्थ जी ने सबको अपने पैरपर आई गॉठ दिखाई जो कपडे से ढकी थी। चिंतीत शिष्योंने इस गॉठ मुक्ति का उपाय पुछा तो समर्थजी बोले ‘‘इस गॉठ को अपने मुखसे चुसकर पुरी तरह स्वच्छ करना होगा।’’ यह उपाय सुनके कुछ पिछे हट गये, किसीने बहाने बनाए लेकीन जब यह बात कल्याण स्वामी जी को पता चली तो वे तुंरत वहॉ गए । समर्थ जी चरणों को हाथ में लेकर जब उन्होनें पट्टी खोली, तो उसमे एक अत्यंत मीठा आम था। समर्थ जी अपने शिष्यों की परिक्षा करने के लिए ऐसीं अनेक लिलाएं करते थे। कल्याण स्वामी की गुरुनिष्ठा देखकर सभी को आश्चर्य हुआ।

ब्रम्हपिशाच

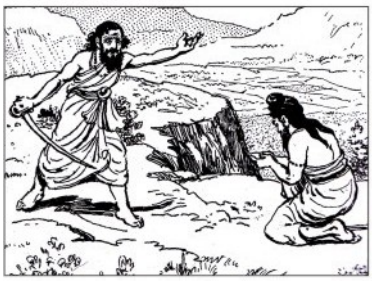

एक दिन समर्थ जी ने ग्रंथलेखन हेतु कल्याण स्वामी को 'चाफल' को भेज दिया। और इधर स्वयं उन्होने पिशाचवृत्ती का वेष ले लिया। अपनी जटाएँ खुली छोड दी। मस्तकपर सिंदुर भर दिया। हाथ में शस्त्र लेकर पिशाचवत् वर्तन करने लगे। खाना पिना सब छोड दिया। जो भी उनके पास आता था उसे वे भगा देते थे। सभी लोग चिंतीत हो गये। समर्थजी के इस अवतार का सामना करने का सामर्थ्य किसी में न था। तब कल्याण स्वामी को बुलाया गया। जब उन्हें यह घटना पता चली, उन्होनं शिघ्र ही प्रसाद बनाया। प्रभु श्री रामचंद्र जी को भोग लगाने के बाद वह प्रसाद वे समर्थजी के पास ले गये । उस समय समर्थजी रौद्ररुप में ही थें। वे बोले ''कल्याण, वापस जाओ''। कल्याण स्वामी आगे बढे सब समर्थ जी बोले ''कल्याण आगे मत बढो, तुम्हारे प्राण संकट में पड जाएंगे।'' यह सुनने के पश्चात कल्याण स्वामी बोले ''स्वामी आपके हाथोंसे अगर मुझे मृत्यु आती है, तो यहीं मेरे लिए मोक्ष है।'' और वे आगे बढे। तब समर्थ जी शस्त्र चलाने के लिए हाथ उपर उठाया। कल्याण स्वामी ने अपना मस्तक उनके सामने झुकाया। समर्थ जी ने वह शस्त्र फेंक दिया और कल्याण स्वामी को गले लगाया। अपने गुरु के चरणो में प्राण न्योछावर करनेवाले कल्याण स्वामी को समर्थ ने अपना 'गुरुत्व' भी दे दिया।

'पान' खाने की इच्छा

समर्थ जी का निवास अनेकों समय अरण्य, गुफाओं होता था। अपने शिष्यों के साथ वे वहा अध्यात्मचिंतन करते थे। हमेशा की तरह परिक्षा हेतु उन्होने मध्यरात्री मे पान खाने की इच्छा प्रगट की। मध्यरात्री एवम् घना अरण्य ऐसे में वहॉ पान कैसे होता? किंन्तु गुरुइच्छा यही गुरु आज्ञा समझकर कल्याण स्वामी उस अंधेरी रात में पान लाने के लिए चल पडे। बहुत देर हो गयी, किंन्तु कल्याण स्वामी लौटकर नही आये । तो समर्थ जी स्वयंम ही उनकी खोज में निकले। कुछ दुरी पर कल्याण स्वामी मुर्छित पडे

थे। उन्हे किसी जहरिले सॉप ने काट दिया था। तब समर्थ जी ने उस विष को निकाल दिया। कल्याण स्वामी जग गये। इसके बाद सभी शिष्य और समर्थ जी वापस लौट गये।

पुजनिय वस्त्र

प्रतिदिन कल्याण स्वामी नदीपर समर्थ रामदास स्वामीजी के वस्त्र धोने जाते थे। एक दिन कुछ लोगों ने देखा की कल्याण स्वामी एक वस्त्र धोने के बाद उन्हे बडे ही पुज्य भाव से नमस्कार कर रहे थे। यह देखकर लोगों को आश्चर्य हुआ। उन्होने पुछा '' ये किसके वस्त्र है? आप इन्हें ज्यों नमन कर रहे है?'' तब अत्यंत प्रेमभाव से कल्याण स्वामी बोले ''ये मेरे सद्गुरुदेव के वस्त्र है। इसी कारण ये वस्त्र मुझे पुज्य है और में इन्हें नमन कर रहा हूँ।'' ऐसे वचन सुनकर नदीपर आए लोगोंने समर्थ जी के दर्शन की इच्छा व्यक्त की। कल्याण स्वामी उन्हे समर्थ जी के दर्शन के लिये ले गये। समर्थ जी का दर्शन कर सभी लोग कृतार्थ हो गये।

चोरो से सामना

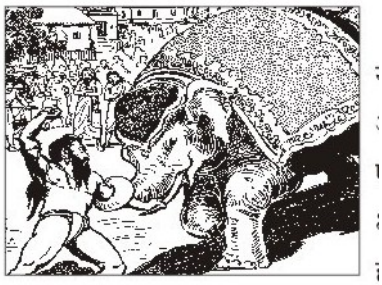

एक रात में कल्याण स्वामी समर्थ जी के पैर दबा रहे थे। उतने मे सज्जनगड पर चोर आ गये। तो समर्थ जी की आज्ञा लेकर कल्याण स्वामी ने सभी चोरों का सामना किया । और उन्हे भगा दिया। समर्थ जी और कल्याण स्वामी एक यात्रा में गये थे। वहॉ एक हाथीपर ये नियंत्रण छुटने से भगदड मच गयी। तब कल्याण स्वामी ने अपनी शक्ति का परिचय दिया और हाथीपर नियंत्रण पा लिया। कल्याण स्वामी कई बार समर्थ जी को कंधेपर बिठाकर नदी पार करवा देते।

''रत्नों का क्या करु?''

एक बार समर्थ जी ने कुछ रत्न कल्याण स्वामी कों पहनने के लिये दिये । तो वे उदास हो गये। इस उदासी का कारण पुछा, तो कल्याण स्वामी बोले ''इन पत्थरों का मुझे क्या उपयोग? अगर मैं यह पहन लुँगा तो आपकी सेवा अच्छी तरह से नही कर पाउंगा। कृपया मुझे ये नही चाहिए ।'' कल्याण स्वामी के ये बोल सुनकर समर्थ

संतुष्ट हो गये। कल्याण स्वामी का किसीने हाथ में पहनने के लिये 'कडे' दे दिये। तो उन्होंने वे 'कडे' कहीं फेंक दिये। एकमात्र विरक्ति ही कल्याण स्वामी का भुषण था। समर्थ जी अपने इस शिष्य का वैराग्य देखकर बहुत ही संतुष्ट होते थे।

कल्याण स्वामी ने अपने जीवन में गुरुसेवा का आदर्श प्रस्थापित किया है। समर्थ जी को सज्जनगडपर जो तालाब है उसके पानी से अस्वास्थ्य होता था। इसलिए कल्याण स्वामी प्रतिदिन सज्जनगड से नीचे उतरकर 'उरमोडी' नदीसे पानी लाते थे। जिन हंडोमें वे पानी लाते थे। बिना पानी के उनका वजन लगभग १८ किलो है। वे दोनो हंडे आज भी सज्जनगडपर है। यहीं पानी समर्थ जी पीने और स्नान के लिये उपयोग करते थे। कल्याण स्वामी के इस प्रकार के शारिरिक श्रम के अनुसार उनका आहार भी वैसा हि था। समर्थ जी ने उन्हे दाल, गुड और घी खाने को कहा था।

दालगप्पु

कल्याण स्वामी दिनरात गुरुसेवा में लगे रहते थे। उनका यह दिनक्रम देखकर कुछ पढाकू विव्दान बोलने लगे कल्याण न तो कभी ध्यानधारणा करता है, न ही कुछ पढता है। दिनभर यह सिर्फ पानी ढोता रहता है। वे लोग कल्याण स्वामी को दालगप्पू कहते थे। जब समर्थ जी को यह बात पता चली तो उन्होंने एक दिन सभी शिष्यों के साथ अत्यंत गहन वेदांत विषय की चर्चा शुरु की। समर्थ जी एक अनुभवी महात्मा थे। उनके सामने केवल शब्दोंकी फुलझडियॉ जलानेवाले एकदम शांत हो गये। तभी समर्थ जी ने कल्याण स्वामी को बुलाया। और एक श्लोकार्ध बताया। कल्याण स्वामी ने वह श्लोक तत्काल पुरा कर दिया। समर्थ जी श्लोक का पहला चरण कहते कल्याण स्वामी उसे पुरा कर देते। ऐसा करते करते अनेक श्लोक हो गये और एक ग्रंथ बन गया जिसमें जीव, जगत्, ब्रम्हमाया का विस्तार से विवरण है। सभी शिष्योंको कल्याण स्वामी का ज्ञान देखकर आश्चर्य हुआ। इस संवादरुपी ग्रंथ को 'दासगीता' कहते है। इसी ही प्रकार की बात 'दासबोध' के बारे में हुई। कुछ शिष्य कहने लगे कल्याण तो 'दासबोध' पढता ही नही। दिनभर लेखन करता रहता है। तब समर्थ जी ने सबको एकत्रित किया और ओवी एक प्रकार की काव्य रचना का प्रथम चरण बोला

ऐसा सद्गुरु पुर्णपणी।

लेकिन कोई भी इसे पुरा न कर सका। इतने मे लेखन मे व्यग्र कल्याण स्वामी वहॉ आए और दासबोध की उस ओवी को पूर्ण किया।

ऐसा सदगुरु पुर्णपणी । फिटे भेदाची कडसणी।

देहेविण लोटांगणी । तया प्रभुसी।

कल्याण स्वामी की पठनक्षमता अद्‌भुत थी। उनके ज्ञान की कोई सीमा न थी। फिर भी वे हमेशा गुरुसेवा में लगे रहते थे। कल्याण स्वामी ''सजीव'' दासबोध थे।

समर्थ रामदास स्वामी के 'लेखक'

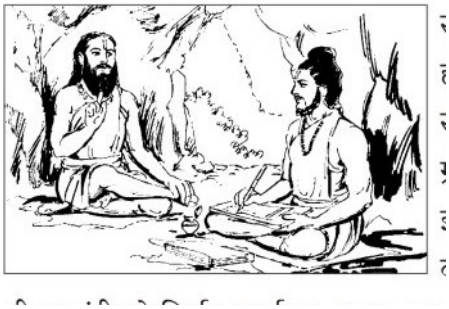

कल्याण स्वामी मुख्यरुप से जाने जाते है, समर्थ रामदास स्वामी जी के लेखक के रुप में। आज जो भी कुछ समर्थ साहित्य उपलब्ध है वह श्री कल्याण स्वामी के हाथ से लिखा हुआ है। समर्थ जी प्राय: घने अरण्य, गुफाओं में निवास करते थे। कल्याण स्वामी प्रतिक्षण उनके साथ रहते थे। समर्थ जी जो सभी कुछ काव्य करते उसे कल्याण स्वामी तत्काल लिख लेते थे। महाराष्ट्र प्रांत के 'शिवथर घल' नामक एक रम्य एवमं दुर्गम गुफा में समर्थ रामदास स्वामी जी ने 'दासबोध' जैसे अपुर्व ग्रंथ की रचना की। समर्थ जी ने दासबोध बताया और कल्याण स्वामी ने लिख लिया। ऐसे ही 'मनाचे श्लोक' भी समर्थ जी ने बताये और कल्याण स्वामी ने लिख लिये। कल्याण स्वामी एक दिनमें कई पक्तिंयॉ लिखते थे। उनके पास एक 'झोली' थी। उसमें वे स्याही, लेखन साहित्य, संदर्भ ग्रंथ यह सब रखते थे। उनका हस्ताक्षर अत्यंत सुंदर था। लेखन के लिए वे पन्ने कब बनाते, स्याही कब तैयार करते इसका पता नहीं चलता था। उनके लेखन मे कभी कोई गलती नही दिखती थी। धुले के 'समर्थ वाग्वदेवता मंदीर में रखा हुआ कल्याण स्वामी के हाथोंसे लिखित २५० पन्नोंका 'कल्याणपोथा' नामक संग्रह उनके लेखन कुशलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस एकाग्रता का कारण है कल्याण स्वामी का योगशास्त्र में अधिकार।

जगदोध्दार के लिए प्रस्थान करो

'गुरुशिष्य पंरपरा' यह भारतीय संस्कृती का बहुत बडा वैशिष्टय है। शिष्य के परिपुर्ण होने के पश्चात उसके गुरुदेव शिष्य को गुरुत्व प्रदान करते है। और वह शिष्य इस गुरुत्व से सामान्य जनोंका उध्दार करता है। यह गुरुशिष्य परंपरा प्राचीन कालसे हमारे देश में चल रही है।

कल्याण स्वामी १०-१२ वर्ष की आयु में समर्थ रामदास स्वामीजी के शिष्य बन गये। इतनी कम आयु में उन्हें गुरुकृपा का लाभ हुआ। कल्याण स्वामी साधारणत: ३५ वर्ष समर्थजी की सेवा में थे। समर्थ जी की समाधी के पश्चात ३३ वर्ष वे समर्थ कार्य करते रहे। इस प्रदिर्घ काल में समर्थ जी ने कल्याण स्वामी की अनेक परिक्षाएँ ली। उन सब परीक्षाओं में कल्याण स्वामी उत्तीर्ण हो गये। समर्थ जी के मार्गदर्शन में कल्याण स्वामी नें कठोर साधना की । गुरुसेवामें स्वयं को अर्पित करके वे गुरु कृपापात्र हो गये । अपना प्रिय शिष्य कल्याण सभी परिक्षाओं में उत्तीर्ण हुआ है । उसने कठोर साधना की है । अब कल्याण ने गुरुपद को धारण कर सामान्यजनों का उध्दार करना चाहिए, ऐसा समर्थजी का मनोदय अत्यंत स्वाभाविक था । अपने कार्य को संभालने के लिए समर्थ जी को कल्याण स्वामी सभी रुपों से योग्य लग रहे थे । यह बात समर्थ जी ने कल्याण स्वामी को बतायी । किसी अन्य स्थान पर जाकर प्रभु श्री रामचंद्र की भक्ति में संपुर्ण समाज को लगाने की वह आज्ञा थी । समर्थ जी बोले ''कल्याण, अब तुम किसी अन्य स्थानपर जाओ । जगदोध्दार करो। मेरा आर्शिवाद सदैव तुम्हारे साथ है ''।

अपने जीवन में समर्थ जी की प्रत्येक आज्ञा का पालन करनेवाले कल्याण स्वामी यह आज्ञा सुनकर कुछ समय तक दु:खी हुए । अपने गुरुदेव समर्थ जी सेवा तीन तपों से अधिक की, उन सद्गुरु देव से अब वियोग होगा यह सुनकर कल्याण स्वामी के नत्रों में आसु आ गये, कंठ गदगद हो गया । शिष्य का यह प्रेमभाव देख समर्थ जी ने कल्याण स्वामी आशिर्वाद दिया ।

साधारणत: सन १६७८ यह वर्ष था। कल्याण स्वामी जगदोध्दार के लिए निकल पडे । कहॉ जाना है इस के कुछ पुर्वसंकेत भी थे । ऐसा कहॉ जाता है, कि कुछ समय पुर्व जब कल्याण स्वामी और समर्थ जी श्रमहरणी सीना नदी के तट के समीपसे गुजर रहे थे, तभी समर्थ जी ने कल्याण स्वामी को कुछ संकेत दिये थे । वहीं कल्याण स्वामी की कर्मभुमी थी । महाराष्ट्र प्रांत के एक प्रदेश मराठवाडा में स्थित डोमगांव, परंडा इन गावों का परिसर । समर्थजी ने उन्हे यह प्रदेश बताया ।

एक शुभ दिवस कल्याण स्वामी नें सज्जनगड से डोमगांव की ओर प्रस्थान की सिध्दता कर दी । उससें पहले, सज्जनगड पर कल्याण स्वामी का किर्तन हुआ । प्रभु

श्रीरामचंद्र के सामने कल्याण स्वामी ने भक्तीरस की सरयु बहा दी । सभी श्रोतावृंद इस किर्तन से तृप्त हो गये । किर्तन होने के पश्चात समर्थ रामदास स्वामी ने अपनी स्वयं की जपमाला कल्याण स्वामी को प्रसाद रुप में दे दी । और अंतिमत: वह प्रभात हो गयी । समर्थजी के चरणोंपर कल्याण स्वामी ने अपना मस्तक रखा । समर्थ जी ने अपने प्रिय शिष्योत्तम कल्याण को आशिर्वाद दिया। अब कल्याण स्वामी सज्जनगड से नीचे उतरने लगे । उनके साथ और सब शिष्य भी थे । सभी उन्हें और उनके साथ के भक्तों को विदाई देने के लिये नीचे तक आये । गुरुआज्ञा पालन करने के लिए कल्याण स्वामी सज्जनगड से डोमगांव की मार्गस्थ हो गये ।

डोमगांव की दिशा में.....

डोमगांव को जाने से पहले कल्याण स्वामी सातारा के पास शिरगांव को गये । वहॉ अपने बंधु दत्तात्रय स्वामी के यहॉ कुछ समय रुककर उन्होंने किर्तन सेवा की थोडी समय वहॉ व्यतीत करने के पश्चात वे डोमगाव की ओर निकले ।

रास्तें में 'पंढरपुर' था। पंढरपुर से पहले घना अरण्य था । इसी घने अरण्य में 'हणमंत' नाम के डाकु ने साथियों के साथ कल्याण स्वामी और सभी भक्तों को घेर लिया । सभी सामान्य जन भयभीत होकर कापनें लगे । तभी कल्याण स्वामी ने सबको ढाढस बंधायॉ । आत्मविश्वासपुर्वक बोले ''हमारे सद्गुरु समर्थ रामदास स्वामी है । हमें किसीसे भय नही हैं।'' ऐसे बोलकर उन्होंने एक धीरगंभीर दृष्टिक्षेप उस डाकु पर डाला। जिस क्षण यह दृष्टीक्षेप उस डाकूपर पडा उसी क्षण वह कल्याण स्वामी के चरणों में गिर गया। यह कल्याण स्वामी के योगबल का प्रभाव था।

कल्याण स्वामी बोले ''यदि तुम्हे अपने परिवार के लिये कुछ चाहिये तो यहॉ जो कुछ भी है ले जाओ किंन्तु यह चोरी का मार्ग छोड दो। इसमें तुम्हारा हित है।'' इस महात्मा के यह बोल सुनकर उस डाकु की ऑखो में ऑसु आ गये। हणमंत डाकु ने कल्याण स्वामी से क्षमा प्रार्थना की। उनका पुजन किया। वह स्वयं कल्याण स्वामी एवं सभी लोगों को अरण्य के बाहर तक छोडने आया।

डोमगाव की ओर मार्गक्रमण करते हुए कल्याण स्वामी पंढरपुर को आये। कुछ वर्षपुर्व वे समर्थ जी के साथ पंढरपुर को आये थे। वह सभी स्मृतियॉ जागृत हो गयी। भगवान श्री विठ्ठल का दर्शन लेने के पश्चात चंद्रभागा नदी के तटपर कल्याण स्वामीने भक्तिरस से ओतप्रोत भरा किर्तन किया। यह किर्तन सुनकर सभी का श्रोताओं को ऐसा लगा मानो स्वयं समर्थ रामदास स्वामी किर्तन कर रहे हो। पंढरपुर की यात्रा विधीपुर्वक संपन्न करने के बाद वे 'तुलजापुर' को आये। तुलजापुर को उन्होने माता आदिशक्ती तुलजाभवानी का दर्शन लिया। तुलजापुर से भ्रमण करते करते वे अपनी कर्मभुमी डोमगाव, परंडा को आये।

डोमगांव में कल्याण स्वामी

वर्तमान महाराष्ट्र राज्य के उस्मानाबाद जनपद में परंडा तहसील में 'डोमगांव' यह छोटासा गॉव है। यह गॉव सीना नदी के तट पर बसा है। उस समय यह प्रदेश विधर्मी आक्रमकों से घिरा हुआ था। ऐसी परिस्थिती में प्रभु श्री रामचंद्र की उपासना होना एवं उनका आदर्श जनजन में प्रस्थापित होना यह अत्यंत आवश्यक था। सन १६७८ से सन १७१४ तर कल्याण स्वामी और उनके शिष्यों ने २५० से अधिक मठमंदिरों की स्थापना कर दी। डोमगॉव को आने के पश्चात अनेक युवकोंने, गृहस्थों ने कल्याण स्वामी से शिष्यत्व ग्रहण किया। 'दासबोध' का प्रसार, किर्तन, रामनामस्मरण के द्वारा कल्याण स्वामी ने सामान्य जनों को भक्तिमार्ग दिखाया।

इसी कालावधी में एक दिन वे एक सरोवर के तटपर बैठकर रामनाम का जप करने लगे। उनके साथ जो शिष्य थे वे भी जप करने लगे। तभी वहॉ एक वेषधारी पाखंडी आया और वह पद्मासन में बैठे कल्याणस्वामी के घुटनोंपर पैर रखकर खडा हो गया। उसका यह औध्दत्य देखकर कल्याण स्वामी के शिष्य उसे दंड देने उठे। किंतु शांतिस्वरुप कल्याण स्वामी बोले ''अपनी परंपरा को कलंक लगे ऐसा हमें कुछ नही करना चाहिए । समर्थ जी की पा से मेरा शरीर बलवान है। जैसे पेडपर बैठे पंछी से पेड को कष्ट नही होता, वैसे ही मुझे भी इससे कोई कष्ट नही। आप शांत रहें''। कल्याण स्वामी के ये वचन सुनकर वह दुराचारी पाखंडी लज्जित हो गया। कल्याण स्वामी के स्पर्शप्रभाव से उसकी वृत्ती में परिवर्तन आ गया। उसने स्वामीजीसे क्षमाप्रार्थना की। कल्याण स्वामीने उसे क्षमा कर रामनाम का उपदेश किया। वह कल्याण स्वामी का शिष्य बन गया।

गुरु विना ब्रह्म नान्यत्

यदयपि कल्याण स्वामी डोमगाव ने अपना कार्य कर रहे थे, किंतु उनका चित्त तो समर्थ चरणों की ओर ही था। वे अपने शिष्यों कों बारंबार अपने सद्‌गुरु समर्थ रामदास स्वामी का दिव्य चरित्र सुनाते थे। उस समय उनकी ऑखे भर आती थी। कल्याण स्वामी शिष्योंसे कहते मैं तो यहॉ हूँ, अब समर्थ जी का काव्य कौन लिखकर लेता होगा? समर्थ जी तो विदेही महात्मा हैं किन्तु उन्हे समयपर भोजनप्रसाद कौन देता होगा? समर्थजी की महिमा अपार है।'' गुरुशिष्य का यह प्रेमभाव देखकर सभी लोग धन्य होते थे। एक दिन कल्याण स्वामी किसी गॉव से मार्गक्रमण कर रहे थे। तभी गॉव के लोग कल्याण स्वामी का चरणस्पर्श करने लगे। उस समय कल्याण स्वामी के हाथ में 'वीणा' थी। तत्काल कल्याण स्वामी ने वह वीणा दुसरी जगह रखने के लिये दे दिया। वे बोले ''यह वीणा देखकर लोग मुझे 'हरिदास' कह रहें हैं। किंन्तु मुझे तो 'रामदासी' यही नाम प्रिय है। 'रामदासी' होना तो बहुत बडा पुण्य का फल है।'' इस प्रसंग से हम यह बोध ले सकते हैं की 'अनन्यभाव' किसे कहते है। अपने गुरु के नाम के प्रति इतनी श्रध्दा हो तो, यह गुरुभक्ती कितनी उच्च कोटी की है।

समर्थ रामदास स्वामी की महासमाधी

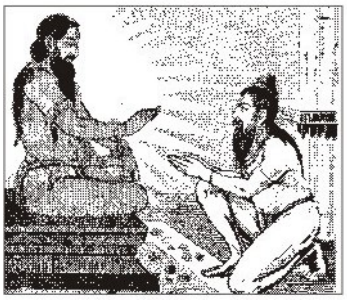

माघ वद्‌य नवमी शक १६०३, सन १६८१ में समर्थ रामदास स्वामी ने सज्जनगड पर अपने अवतार को समाप्त किया। उस समय उनके प्रिय शिष्य कल्याण स्वामी सज्जनगड पर नही थे। अपने सद्‌गुरु ने नश्वर देह का त्याग कर दिया, उनके अंतिम दर्शन का लाभ नही मिला। यह जानकर कल्याण स्वामी को दु:ख अनावर हो गया। समर्थ जी के दर्शन करने के लिये कल्याण स्वामी डोमगाव से सज्जनगड आये। उन्होनें अपने अश्रुओं से समर्थ जी की समाधि को अभिषिक्त किया। अपना प्रिय शिष्योत्तम कल्याण दर्शन के लिये आया है यह देखकर समर्थ जी ने कल्याण स्वामी को दर्शन दिये। समाधि में से प्रकटे समर्थजी का ज्योतीर्मय सगुण रुप का दर्शन प्राप्त कर कल्याण स्वामी सज्जनगड से नीचे आये। उन्हें समर्थ जी ने कहॉ ''मेरी काया पॅचत्व विलीन हो गयी है किन्तु में दासबोध, आत्माराम, मनाचे श्लोक इत्यादी ग्रंथो के रुप में निरंतर सभी शिष्यों को मार्गदर्शन करता रहुंगा।'' समर्थ जी का यह गुरुपदेश प्राप्त कर, कल्याण स्वामी सज्जनगड से नीचे आये। किन्तु उसके पश्चात वे

कभी भी सज्जनगड पर नही गये। सज्जनगड की हर एक जगह पर समर्थ जी की स्मृतियॉ थी। उसे पैर लगाना कल्याण स्वामी को नहीं भाया। तद्नंतर प्रतिवर्ष कल्याण स्वामी सज्जनगड के नीचे के तल तक जाते थे। उपर नही चढते थे। वहीं से वे सज्जनगड को नमस्कार करते और यात्रा संपन्न कर वापस आते थे। कल्याण स्वामी को पुरा सज्जनगड ही समर्थरुप लगने लगा था।

कल्याण स्वामी का व्यक्तित्व

कल्याण स्वामी अत्यंत बलवान थे। वे प्रतिदिन १२०० सुर्यनमस्कार लगाते थे। बाढ आने पर अनेकों बार वे नदी में कुद जाते और बडी सहजता से दुसरे किनारें पहुॅच जाते। उनकी दाढी एवं जटाऍ बढी हुई थी। जटाओं को वे रुद्राक्ष माला से बॉधते थे। शरीर पर भस्म लगाते थे। दोनों कानों में कुंडल, हाथ में मुद्रिका, और एक बाजु पर 'हनुमान' जी प्रतिमा बॉधते थे। उनके गलें में यज्ञोपवित रहता था। वे केसरिया वस्त्र पहनते थे और मुख में अखंड रामनाम का जप रहता था। कल्याण स्वामी के मठ में अनेक शास्त्रग्रंथो का बहुत बडा संग्रह था। अगर कोई शिष्य वह ग्रंथ मांगे तो कल्याण स्वामी उसे वह ग्रंथ दे देते थे। उन्होंने बनाया हुआ हनुमानजी का एक चित्र भी उपलब्ध है। उनका हस्ताक्षर बहुत हि सुंदर था। एक दिन में वे सेंकडो 'ओवियॉ' एक काव्यप्रकार लिख लेते थे। उनके कंधेपर 'झोली' रहती थी। उसका आकार एक बोरी जितना बडा था। इस 'झोली' में प्राचीन ग्रंथ होते थे। उनके हाथ में जपमाला रहती थी और मुख से अखंड 'श्रीराम जयराम जय जय राम' का जप चलता था। रामदासी परंपरा में कल्याण स्वामी को 'योगीराज' कहॉ जाता है। उनका पतंजलि प्रणीत अष्टांगयोग में उच्च कोटी का अधिकार था। उनका जो एकमेव चित्र उपलब्ध है वह भी वे 'गर्भासन' करके योगमुद्रा में बैठी अवस्था में है। कल्याण स्वामी एक श्रेष्ठ किर्तनकार थे। समर्थ रामदास स्वामीजी व्दारा स्थापित 'चाफल' के राम मंदीर में रामनवमी के बाद दशमी को कल्याण स्वामी किर्तन करते थे। कल्याण स्वामी के स्वभाव के बारे में जो 'दासविश्रामधाम' ग्रंथ में लिखा है वह अत्यंत भावस्पर्शी है। कल्याण स्वामी सभी शिष्यों को एकत्र करके समर्थ जी का दिव्य चरित्र सुनाते थे। उन्होने अपने शिष्यों को विविध कलाओं में प्रवीण किया। यदि कोई शिष्य कहीं गलती करे तो बडे प्रेमभाव से उसे समझाते थे। कोई रामभक्त दरिद्री अथवा दुर्बल हो तो भी उसको प्रभु रामचंद्र जैसा ही समझते थे। यदि कोई सामान्य कवी भी कुछ भक्तिपुर्ण काव्य करें तो वे उसका सन्मान करते थे। समकालीन काव्य में कल्याण स्वामी को 'भरत' जी का अवतार कहॉ गया है। सभी दिव्य गुणों से मंडित कल्याण स्वामी जैसे समर्थ जी की प्रतीमुर्ति प्रतित होते थे।

कल्याण स्वामी का शिष्य परिवार

डोमगाव को आने के पश्चात कल्याण स्वामी ने रामभक्ती का प्रसार किया। उनकी निस्पृहता, विरक्ती, उपासना, ज्ञान, इत्यादी गुणोंसे प्रभावित होकर अनेकोंने कल्याण स्वामी का शिष्यत्व ग्रहण किया। 'रामदासी' संप्रदाय में समर्थ रामदास स्वामी के बाद सबसे ज्यादा शिष्य समुदाय कल्याण स्वामी का है। कल्याण स्वामी और उनके शिष्य-प्रशिष्यों नें मराठवाडा, आंध्रकर्नाटक का सीमा प्रदेश, वर्तमान आंध्रप्रदेश में २५० से ज्यादा मठ मंदिरो की स्थापना कर तत्कालीन समाज में चैतन्य निर्माण किया। डोमगाव का मठ इस कार्य का केंद्रबिंदु था। अभी कल्याण स्वामी के ५८ शिष्यों की सुची उपलब्ध है। इनमें डोमगाव मठ उत्तराधिकारी मुद्गल स्वामी, तडवले मठ के 'जगज्जीवन स्वामी, बारामती के रामाजी दादा, आपचंद मठ के शिवराम स्वामी आदि प्रमुख शिष्य है। इन सभी शिष्यों का रामदासी संप्रदाय के विस्तार में बहुत बडा योगदान है। कल्याण स्वामी के शिष्यों ने अपने सद्गुरु के स्तवन रुप तें जो काव्य किया है वह अत्यंत भावपुर्ण है। शिष्यवर्ग ने कल्याण स्वामी के व्यक्तित्व का उत्कटतापुर्वक वर्णन करते हुए अनेक पदय, आरतीयॉ रची है।

कल्याण स्वामी द्वारा रचित काव्य

कल्याण स्वामी ने समर्थ रामदास स्वामीजी के सभी ग्रंथ एवं काव्य का लेखन किया तथा उन्होंने कुछ स्वतंत्र रचनाएँ भी की हैं। कुल ओवी संख्या १४४८ है। उसमें महावाक्य पंचीकरण, सोलीव सुख, ध्रुव आख्यान, शुक आख्यान, आरतियॉ यह कुछ प्रमुख रचनाएँ है। ''महावाक्य पंचीकरण'' यह रचना वेदांन्त विषय पर है। इसमें ब्रम्ह-माया जीव जगत् इत्यादी के बारे में लेखन है। इसमें लगभग ७०० 'ओवीयॉ है। 'सोलीव सुख' नामकी और एक रचना है। जिसमें योगमार्ग के विषय में लिखा है। गुरुने शिष्यपर अनुग्रह करने के बाद आनेवाली अद्भुत अनुभुतियों का वर्णन इसमें हैं। कल्याण स्वामी ने समर्थ रामदास स्वामी पर अनेक आरतीयॉ, पदय रचे है। उन्होंने 'रुक्मीणी स्वयंवर'भी लिखा है। डोमगाव जिसके तटपर है उस 'सिना' नदी को उन्होने 'श्रमहरणी' यह नाम दिया। कल्याण स्वामी ने 'श्रमहरणी' सीना नदी की भी आरती लिखी है। 'संतमाला' एक ऐसी रचना है जिसमें, संपुर्ण भारत के विभिन्न प्रांतो में हुए संतो को एकेक अंग का रुपक देकर प्रभु श्रीरामचंद्र जी का सगुण ध्यान का वर्णन किया है। यह सब काव्य पढकर भक्ति रस की अनुभुती आती है। कल्याण स्वामी श्रेष्ठ कवी, वेदांती और योगी थे इसका प्रमाण जगह जगह मिलता है।

गुरुशिष्य की एकरुपता

समर्थ रामदास स्वामीजी के समाधि के पश्चात उनकी अस्थियॉ 'चाफल' के एक 'वृदांवन' में रखी थी। उन अस्थियों की पूजाअर्चना करने के लिये कल्याण स्वामी के शिष्य केशव स्वामी 'चाफल' मे रहते थे। वे प्रतिवर्ष अपने गुरुदेव के कल्याण स्वामी के दर्शन हेतु डोमगाव जाते थे। जब केशव स्वामी समर्थ जी के अस्थि विसर्जन के बारें में कल्याण स्वामी से पुछते थे, तब कल्याण स्वामी कुछ समय रुकने को कहते।

सन १७१४ की घटना है। समर्थ जी की समाधि को ३३ वर्ष हो चुके थे। कल्याण स्वामी का वास्तव्य 'परंडा' मे था। उस वर्ष 'आषाढ' मास यह अधिकमास था। इस पुण्यपर्व में कल्याण स्वामी 'रामकथा' का कथन कर रहे थे। कल्याण स्वामी जैसे ब्रह्मनिष्ठ महात्मा के मुखारविंद से रामकथा का श्रवण करने के लिये अनेक साधुसंत 'परंडा' में आये थे। सज्जनगड से भी अनेक श्रेष्ठ सत्पुरुष वहॉ थे। वह रामकथा सुनकर सभी भक्त तृप्त हो गये। इधर केशव स्वामी प्रतिवर्ष की तरह 'चाफल' से परंडा की ओर निकले। किंन्तु इस वर्ष उन्होंने अपने साथ समर्थ जी की अस्थियॉ भी ली। केशव स्वामी का ऐसा विचार था की डोमगाव को कल्याण स्वामी के दर्शन के बाद आगे मुक्ति क्षेत्र 'वाराणसी' को जाकर गंगा जी में समर्थ जी की अस्थियॉ विसर्जित करें। और इधर परंडा में अघटित घटना घट गयी। अपने सद्गुरु समर्थ रामदास स्वामी अंतिम प्रवास को निकले हैं यह अंर्तज्ञान से जानकर शिष्योत्तम कल्याण स्वामी ने योगबल से परंडा में प्राणत्याग कर दिया। वे योगीराज कल्याण स्वामी 'गर्भासन' में बैठे और अपने प्राण पंचतत्व में विलीन कर दिये। वह दिन था 'अधिक आषाढ शुध्द त्रयोदशी शालिवहन शक सोलासो सैंतीस १६३६ सन १७१४ । समर्थ जी के समाधी के पश्चात ३३ वर्षो के बाद कल्याण स्वामी ने समाधी ली। वह भी समर्थ जी के अस्थि विसर्जन के पुण्ययोग में। सभी शिष्यवर्ग शोकसागर में डुब गया। 'परंडा' के एक शिष्य 'देशमुख' ने कल्याण स्वामी का पार्थिव परंडा से 'डोमगाव' को लाया। वहीं उनके अंतिम संस्कार किये गये। इधर केशव स्वामी जब परंडा को पहुँचे तब उन्हें कल्याण स्वामी के समाधि की वार्ता मिली। कल्याण स्वामी की गुरुनिष्ठा देख उनकी ऑखे भर आयी। वे परंडा से डोमगाव आये। अत्यंत दु:ख भरे अंत:करण से उन्होंने कल्याण स्वामी की अस्थियॉ एकत्र की और गुरुशिष्यों की आस्थियों को साथ में लेकर वे वाराणसी को चले गये। वहीं उन्होंने अंस्थियोंका विसर्जन कर दिया। कल्याण स्वामी के शिष्य मुद्गल स्वामी ने डोमगाव में जहॉ कल्याण स्वामी के अंतिम संस्कार हुए थे वहॉ समाधी शिला की स्थापना की। और उसपर भव्य समाधि मंदिर का निर्माण हुआ। गुरुशिष्य का यह अव्दैत अद्भुत है। नश्वर देह का त्याग करने पर भी यह एकरुपता अव्दितीय थी। कल्याण स्वामी नें एक दिव्य और समर्पित जीवन का आदर्श हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

डोमगाव का समाधी मंदिर

अधिक आषाढ शु. १३ सन १७१४ इस तिथी पर कल्याण स्वामी ने समाधि ली। उसके ५९ वर्ष बाद वर्तमान समाधि मंदिर का निर्माण हुआ। कल्याण स्वामी की समाधी 'वालुकाश्म' प्रकार के पाषाण की है। इसपर शिवलिंग, चरण पादुका, भगवद्गीता के श्लोक है। गर्भगृह में समाधी के साथ प्रभु श्रीरामचंद्र सीता माता और लक्ष्मण जी की मुर्तियॉ है। मंदिर बडा भव्य है। यह काले पत्थरों से बनाया है। कल्याण स्वामी के समाधि के सामने उनके शिष्य मुद्गल स्वामी की समाधि है। वहॉपर हनुमान जी की मुर्ति है। रामदासी संप्रदाय में डोमगॉव मठ का महत्व अनन्य साधारण है। डोमगॉव मठ में कल्याण स्वामी के हस्ताक्षर में लिखित 'दासबोध' की मूलप्रति (पाण्डूलिपी) है। यह मूल प्रति अनमोल है। समर्थ जी ने कल्याण स्वामी को दिया हुआ सुवर्णाक्षरों से लिखित एक पन्ना, केशव स्वामी के हस्ताक्षर में लिखित दासबोध, कल्याण स्वामी की जपमाला आदि महत्वपुर्ण चीजें डोमगॉव मठ में है। सन १८०८ में मंदिर के बाहर के भाग का निर्माण कार्य कल्याण स्वामी के शिष्य 'कलेढोणकर इनामदार' जी ने किया। सन १९१४ में लकडी का भव्य सभामंडप तत्कालीन मठपती श्रीरामबुवा जहागिरदार ने बनवाया। परंडा में जहॉ कल्याण स्वामी ने देह विर्सजन किया उस स्थानपर वृंदावन और राम मंदिर है। उसके नीचे एक छोटीसी गुफा है जिसमें कल्याण स्वामी साधना करते थे। डोमगाव के मठ में गत ३०० वर्षों में अनेक साधु संत सत्पुरुषों का वास्तव्य हुआ है। इस मठ की शिष्यपरंपरा भी बहुत बडी है। कल्याण स्वामी शिष्य परंपरा में सन १८४० के आसपास सखाराम महाराज नाम के सत्पुरुष हो गये। उन्होने अभंग रामगीता पंचीकरण इत्यादी ग्रंथ लिखे। वे एक श्रेष्ठ किर्तनकार थे। 'संकेत कुबडी' इस ग्रंथ के लेखक हंसराज स्वामी और सखाराम महाराज अंतरंग स्नेही थे । सखाराम महाराजकी समाधि हैदराबाद¼भाग्यनगर½ आंध्रप्रदेश में है। महान संत ब्रह्मचैतन्य गोंदवलेकर महाराज के सद्गुरु श्री तुकाराम चैतन्य महाराज भी कल्याण स्वामी शिष्यपरंपरा से थे।

वह परंपरा समर्थरामदासस्वामी—कल्याणस्वामी—रामकृष्णस्वामी चिंतामणीस्वामी—रामकृष्णस्वामी—तुकारामचैतन्य—गोंदवलेकरमहाराज। गोंदवलेकरमहाराज के प्रवचनों में कल्याण स्वामी के उल्लेख है।

'दासविश्रामधाम' ग्रंथ को रामदासी संप्रदाय का विश्वकोष कहॉ जाता है। इस 'दासविश्रामधाम' के लेखक आत्माराम स्वामी भी कल्याण स्वामी शिष्य परंपरा से थे। वह परंपरा-समर्थ रामदासस्वामी— शिवरामस्वामी—रामचंद्रस्वामी.-आत्माराम स्वामी।

दासगणु महाराज के गुरु वामनशास्त्री, और प.प. भगवान श्रीधर स्वामी के माता&पिता भी कल्याण स्वामी के शिष्य संप्रदाय में है । समर्थभक्त अण्णाबुवा कालगावकर युवावस्था में डोमगाव में साधनारत थे । संकेश्वर पीठ के शंकराचार्य

कल्याणसेवक स्वामी महाराज भी डोमगाव में कुछ समय तक वास्तव्य कर चुके है । 'धुले' के समर्थ वाग्देवता मंदिर के संस्थापक समर्थहृदय शंकर श्री—ष्ण देव बहुत बार डोमगाव को आये । उन्होंने सर्वप्रथम यहॉ का 'दासबोध लिखकर लिया और उसे प्रकाशित किया । धुले में आज भी डोमगाव मठ से दिये हुए अनेक ग्रंथ है । इतिहास संशोधक श्री दत्तो वामन पोतदार, श्री बाबासाहेब पुरंदरे भी संशोधन हेतु डोमगांव आते थे । डोमगांव में प्रतीवर्ष रामनवमी हनुमान जयंती, दासनवमी, श्री कल्याण स्वामी पुण्यतिथी उत्सव मनाये जाते है । वर्तमान समय में डोमगाव का समाधी मंदिर चारों ओर से पानी में है । 'सीना—कोलेगॉव बांध' की वजह से पुराना गांव पानी में डुब गया है । और नया गांव बसाया गया है । इस बांध के जलाशय को 'कल्याण सागर' यह नाम है । मंदिर तक जाने के लिये अच्छी सडक है ।

डोमगांव को जाने के मार्ग

पुणे से

पुणे-कुर्डुवाडी-परंडा-डोमगाव

कल्याणकल्पतरु

प्राचीन श्रुतीयों में जिनके नाम है महर्षि धौम्य और शिष्य आरुणी, रामायण में महर्षि वसिष्ठ श्रीराम, नाथ संप्रदाय के मत्स्येंद्र गोरक्ष, गुरुशिष्य परंपरा का यह प्रवाह प्राचीन कालसे बहता रहा है । लगभग ३००-३५० वर्ष पूर्व इसी परंपरा का एक सुवर्णपर्व साकार हुआ । समर्थ रामदास स्वामी और योगीराज श्री कल्याण स्वामी यह केवल अव्दैत है श्री कल्याण स्वामी, समर्थ जी के बहीश्चर प्राण थे । प्रतिदिन १२०० सुर्यनमस्कार और रामनाम का अखंड जप, महावाक्य पंचीकरण में लिखा वेंदान्त और सज्जनगड पर रखे पानी के हंडे, दासबोध के हस्तलिखित की मूल प्रती और योगपट्ट बांधे योगासन में बैठे, श्री कल्याण स्वामी को देखकर उन्होंने समर्थ जी का तत्वज्ञान कितनी अचुकता से धारण किया था यह पता चलता है । समर्थ जी की समाधि के पश्चात सबसे ज्येष्ठ होकर भी वे सबसे अलिप्त रहकर अपना कार्य करते रहे । एक पत्र में वे लिखते है-

'कलह के कारण धर्मसंस्थापना के कार्य में बाधा निर्माण हो ऐसा कदापि न करें'।

यह बोध हम सब के लिए है । कल्याण स्वामी ने जो कार्य किया है । उसके स्मृतिचिन्ह आजभी हैं । वह परंपरा अखंडित है । कल्याण स्वामी का जीवन गुरुभक्ति की परिसीमा है । यह दिव्य चरित्र देखकर आगे की अनेक पिढीयों प्रेरणा पाई है । कल्याण स्वामी के तपसे उनकी समाधि, वह श्रमहरणी सीना नदी को तीर्थक्षेत्रत्व प्राप्त हुआ है । यदि अपना चित्त श्री कल्याण स्वामी के चरणों मे लग जाये तो सबका कल्याण होगा यह स्वामी का आशीर्वाद है ।

।। जय जय रघुवीर समर्थ ।।

।। श्रीराम जय राम जय जय राम ।।

संदर्भ ग्रंथ -

दासविश्रामधाम- श्री आत्माराम स्वामी

‘समर्थांची दोन जूनी चरित्रे’ संपादक-शंकर श्रीÑष्ण देव

‘समर्थशिष्य कल्याण’ संपादक -गणेश शंकर देव